आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 1/मार्च 2024
Received: 28/12/2023; Published: 24/03/2024

कहानी

भोंपू , बाजा और उदास लड़की

- मुक्ता

संपर्क – 9839450642

मुक्ता, **भोंपू , बाजा और उदास लड़की** ,आखर हिंदी पत्रिका, खंड 4/अंक 1/मार्च 2024,(88-94)

राजकुमारी ने तालाब में कमल का फूल देखा।

सुंदर लाल कमल का फूल देख वह ललचा गई री ..... और उतर पड़ी पानी में फूल तोड़ने .....

" उसे तैरना आता था क्या ?" सुग्गी ने प्रश्न किया।

" टोक मत ..... जा मैं न सुनाती ..... "

" अइया ..... अब ना बोलूँगी ..... आगे सुना नाऽ..... "

सुग्गी खाट पर अइया के और नजदीक सरक आई।

" राजकुमारी फूल के पास पहुंची। फूल सरक कर आगे बढ़ गया ..... फिर राजकुमारी और आगे बढ़ी ..... फूल और सरक गया।"

" यह कैसा फूल अइया ?"

" अरे शैतानी माया वाला फूल था छोरी ..... असली वाला न था ..... " वृद्धा ने शंका समाधान किया।

" फिर क्या हुआ ?"

" राजकुमारी घुटने भर पानी से ऊपर जैसे ही पहुंची राक्षस ने उसे पकड़ लिया और कैद कर लिया। राक्षस के चंगुल में फंसी राजकुमारी रोती जाती और गाती जाती ..... फिली भर पनिया में गईली हो रामा , फिर भी न मिलल कमल दल फूल ..... "

" गा कर सुनाओ न अइया ..... "

" गाना सुनकर तेरी अम्मा आ जावेगी ..... बेकार ही बखेड़ा खड़ा करेगी ..... अब सो जा छोरी ..... कल काम पर जाना है तुझे ..... "

" फिर क्या हुआ ..... "

" तू तो जानती है ..... रोज यही कहानी जिद करके सुनती है ..... "

" हाँ .... , उसका गीत सुनकर एक राजकुमार आया और उसने राजकुमारी को जेल से छुड़ाया ..... "

" राजकुमारी गाना गाती रही , उसने खुद कैद से भागने की जुगत क्यों न सोची अइया ?"

" मैं भला का जानूँ सुग्गी ..... हमने जो सुनी ..... वैसी ही सुनाई .... भली न लगे तो क्यों सुनने की जिद करती है ...."

" तेरे मुँह से कहानी सुनना बहुत अच्छा लगता है ..... "

" ठीक है ..... अब सो जा ..... मेरी तबीयत भली ना लगे है ..... "

वृद्धा ने करवट बदलते हुए कहा। सुग्गी ने पास सरकते हुए अइया की कमर को बाहों में घेर लिया।

दिन चढ़ चुका था।

वृद्धा ने पानी माँगा। सुग्गी हड़बड़ाकर उठी।

" अइया ..... पानी ..... "

वृद्धा ने काँपते हाथों से कटोरा थामा। दो घूँट पानी पीने के बाद वह निढाल हो कर बिस्तर पर लुढ़क गई। सुग्गी ने वृद्धा के माथे पर हाथ रखा और चिहुँक गई " तेरा माथा जल रहा हैss ..... अइया "

" हूँ ..... " वृद्धा ने आँखें खोलीं।

" तू फिकर न कर ..... काम पर जा।"

" ना ..... मैं ना जाती ..... "

" मारेगी वह ..... "

" जिद न करs ..... यहाँ से जा ..... अभी वह आ जायेगी।"

" आने दे ..... मैं ना जाती ..... "

" मारेगी वह ..... "

" खा लूँगी मार ..... मैं तुझे छोड़ ना जाऊँगी ..... अम्मा तड़के ही बाजा वास्ते गई है। "

" ठीक है ..... देख ..... वहाँ ताखे पर पत्ते हैं ..... यहाँ रख दे मेरे पास ..... उबाल कर पी लूँगी ..... ताप उतर जाएगा।"

सुग्गी ताखा टटोलने लगी।

" यहाँ तो कुछ नहीं है अइया ..... "

" कुछ ना है ..... चल मैं पत्ते ले आऊँगी ..... तू ..... जा ..... कुछ खा लेना ..... भूखी न जाना ..... "

चौराहे के पास आ सुग्गी ने चारों ओर देखा। बायीं सड़क के पास एक दुकान की ओर बढ़ी जहाँ चोटी , फुंदने , मेकअप का सामान , रंग- बिरंगे रिबन, बिंदियों के पत्ते आदि बिक रहे थे। वह दूर खड़ी निहारती रही।

आजकल सुग्गी का मन कपड़े की गुड़िया में नहीं रमता । अंगों में उभार आ रहा है । मन मचलता रहता है । सपने बुनता रहता है । बालों पर हाथ का दबाव पड़ा तो सुग्गी ने मुड़कर देखा ।

" कमीनी..... सासरे के ख्वाब देख रही है ..... मैं घंटे भर से चौराहे पर खड़ी हूँ ..... "

" रात को तूने कहा था ..... देर से आना ..... मैं सुबह बाजा वास्ते जाऊँगी ..... "

" मैं चौराहे पर खड़ी हैरान हुई जाती हूँ ..... तू मस्ती मार रही है इहाँ ....."

" बाजा मिला ?"

" हाँ ..... सरदार लेकर कॉलोनी में पहुंचेगा ।"

" पहले तो बाजा न था ..... ढोलकी पर करतब करते थे ..... "

" अब नया जमाना है ..... सब बाजा सुनना चाहे हैं ..... पहले एक शहर में ठिकाना भी कहाँ था ..... तेरी अइया की बीमारी के कारण यहाँ बनारस में टिकना पड़ा..... इतना भेजा क्यों खाती है ..... काम से काम रख ।"

सुग्गी ने गहरी दृष्टि से कमली की ओर देखा । मन में कसक सी उठी ..... हूँss ..... अइया के कारण ..... या उस भोंपूवाले बच्चा सरदार के कारण । सुग्गी ने देखा है माँ दिन पर दिन कैसे बदलती जा रही है । घाघरे की जगह शलवार कुर्ते ने ले ली है । इकहरा बदन दोहरा होता जा रहा है । नहाने की आदत तो ठहरी वही पुरानी , पिसा नमक बदन पर रगड़ हफ्ते में एक दिन वाली , पर तेल इत्र से बदन पूरे दिन गमकता रहता है । बेतरतीबी से बने जूड़े की जगह अब बाल करीने से रबर बैंड से बंधे रहते हैं। अम्मा की आँखों में मोटा काजल चमकने लगा है । अइया कितना भी बकें चिल्लाएँ ..... अम्मा को कोई फिक्र नहीं..... अब तो उसने अइया को गाली देना भी शुरू कर दिया है । किसी के आगे "अम्मा" मुँह निकला तो आँखें तरेर देती है । सुग्गी सकपकाकर मुँह बंद रखती है । अइया बड़बड़ाती है ...." जब से उसका बेटा .... सुग्गी का बाप मरा ..... ससुरी के पंख निकल आए हैं । भीड़ के सामने सुग्गी को अनाथ बतलाती है अम्मा । कहती है ..... " जब मरम कचोटता है तभी टेंट से पैसे निकलते हैं .... लोग भूखा पेट और नंगापन देखना चाहे हैं ..... भरे पेट वाले को कौन पैसे देगा ?" अइया सुग्गी को झिड़कती है , " सूखती जा रही है लौंडिया ..... हँसना भूल गई है ..... काठ जैसी होती जा रही है ..... तू क्यों उस छिनाल के चक्कर में उम्र गवां रही है .... खेलने खाने के दिन हैं तेरे ..... अपनी जगह उसने तुझे धंधे पर लगा दिया है । नट की छोरी न मोटी होवे न बूढ़ी ... वो तो भैंस जैसा मोटा रही है .... इ s प्रहलाद घाट वाला बच्चा सरदार ..... आग लगे ..... मुँहझौसा ..... उसके चारों ओर मँडराता रहता है ..... मुझे तो डर है ..... वह .... भाग न ले ..... उसके साथ ..... "

" पैर नहीं बढ़ रहे हैं छोरी ..... चलs ... जल्दी ..... टैम हो रहा है .... " माँ की आवाज से सुग्गी की तंद्रा भंग हुई ।

" बड़ी तेज भूख लगी है अम्मा ..... " सुग्गी रुआंसी हो उठी ।

" मैं तो तेरे भले के लिए कहती हूँ ..... भरे पेट आँख झपक गई तो हड्डी पसली सब टूट जावेगी ..... अभी तो दो कौर मिल जाता है ..... फिर तो पानी ही गटकना होगा । भला हो सरदार का , उसके भोंपू ने

आमदनी बढ़ा दी ..... आज बाजा ला रहा है ..... नहीं तो वही ढोल पीटते थे ..... ले यह बिस्कुट खाले । " कमली ने सुग्गी के हाथ में बिस्कुट का छोटा पैकेट थमा दिया ।

" हमें तो डर लग रहा है अम्मा ..... बाजे के साथ कभी डोर पर न चले हैं ....."

" कुछ ना होगा ..... कोई पेट से सीख के ना आवे है .... याद रखना , मुँह बंद रखियो .... अम्मा न निकल जावे ।"

सुग्गी ने सिर हिलाया । चेहरे पर राख जमी थी ।

सरस्वती नगर आ चुका था । बच्चा सरदार ने कालोनी के बीच वाले पार्क के पास पूरी तैयारी कर रखी थी । दोनों ओर कुछ हाथ की दूरी पर दो-दो डंडों को लोहे के पाइपनुमा घेरे में फंसाया था । डंडों के बीच में मोटी रस्सी तनी थी । प्लास्टिक के स्टूल पर बाजा रखा था । बच्चा सरदार भोंपू मुँह में लगाये गुहार रहा था । कमली और सुग्गी को आता देख उसने बाजे की घुंडी दबा दी और मूँछों पर ताव देने लगा । कमली ने हाथ बढ़ाकर भोंपू ले लिया । उसकी आवाज गूँजने लगी , " आइये ..... आइये मेहरबान कद्रदान ..... खेल शुरू होने जा रहा है । यह लड़की जान पर खेल कर आप को खुश करेगी ..... । " "गरीबों की सुनो .... वह तुम्हारी सुनेगा ... कमली की आवाज थमते ही बाजे के स्वर गूँजने लगे ..... तुम एक पैसा दोगे वह दस लाख देगा ..... " सरदार ने बाजे की घुंडी बंद की । कमली की आवाज फिर तेज हुई ... " मेहरबान , पापी पेट का सवाल है दिल खोल कर दीजिये .... लड़की की जान है ..... आपका ईमान है ... कद्रदान ..... मेहरबान ..... हम खुश होंगे ..... आपको दुआ देंगे ..... आपके बच्चे सलामत रहें ..... "

निडर सुग्गी ऊपर चढ़ कर फंसे हुए डंडों के बीच बैठ गई । रात में अइया के मुँह से सुनी कहानी उसे याद आने लगी । माँ जब भिखमंगों जैसा गुहारना शुरू करती है तो सुग्गी का दिल बैठने लगता है ..... उसके मन में कई बातें घुमड़ने लगती हैं ..... टी. वी. में देखती है लड़कियों को करतब करते हुए , बदन को तोड़ मरोड़ कर नाच-नाच कर फर्श पर घूमते हुए ..... सब ताली बजाते हैं। सुग्गी सोंचती है उसके जैसा रस्सी पर डंडा पकड़ कर ..... गुलदस्ता सिर पर रख कर वे लोग चल सकती हैं क्या ? अइया कहती है , हम लोग भी कलाकार हैं ..... पहले राजा – महाराजा हमारी बड़ी कद्र करते थे ..... समय बदल गया । अम्मा को लोगों के आगे हाथ फैलाना पड़ता है ..... सुग्गी अम्मा को सबके सामने अम्मा क्यों नहीं कह सकती ?

मजमा जुट गया था । चारों ओर लोग घेर कर खड़े थे । बच्चा सरदार ने आवाज लगाई ... " चल शुरू हो जा लड़की .... दिखा अपना फन .... साहबान सांस रोककर देखिये तमाशा .... "

" बंद करो यह तमाशा ..... " तेजी से भीड़ की ओर बढ़ रही एक महिला जोर से चिल्लाई , " यह गैर कानूनी है ..... बच्चों से यह सब नहीं कराया जा सकता ..... मैं पुलिस बुलाउंगी.... "

कमली तमतमाकर चिल्ला पड़ी , " बुलाइये पुलिस ..... क्या करेगी पुलिस ..... उसका भी तो पेट है ..... मैडम हम गरीब आदमी हैं ..... हमारा पेट भरेगा तो आपको दुआ देंगे ..... यह गरीब अनाथ बच्ची है ..... हमने इसे पाला पोसा , करतब सिखाया ..... हमारे पेट पर लात मत मारिए । "

" खेल दिखा रहे हैं यह लोग .... कोई भीख तो नहीं माँग रहे ... " भीड़ में से एक आवाज आई ।

" लाखों बच्चे जो भीख माँग रहे हैं उनके लिए क्या हो रहा है ?"

" जाइये – जाइये , इन्हें अपना काम करने दीजिये ।" भीड़ में से कई आवाजें उठने लगीं।

महिला की आवाज फिर गूँजी , " मैं पूछती हूँ आप लोगों ने क्या इतनी उदास बच्ची कभी देखी है ? आप लोग इसकी उदासी दूर कर सकते हैं ..... यह पढ लिख कर कुछ बन सकती है ....."

भीड़ में कुछ लोग सकपकाये । कुछ ठहाका मार कर हँसे । कुछ जुमले उछालने लगे , " अरे !! यह भी कोई बात हुई ? "

" औरत सनकी लगती है ..... "

औरत के बगल में खड़ा आदमी उसे हाथों से पकड़ कर घर के अंदर ले आया । औरत के कदम बोझिल थे ।

तमाशा फिर शुरू हो गया । बाजा बजने लगा । " गरीबों की सुनो ..... वो तुम्हारी सुनेगा ..... "

कमली के बार – बार आँखें तरेरने पर भी सुग्गी न उठी । गाने के शोर के साथ ही सुग्गी के पैर सुन्न होते जा रहे थे । कमली ने हारकर सरदार को बाजा बंद करने का संकेत किया । कमली ने डंडा दोनों हाथों से थाम लिया । सुग्गी के अंदर कहानी की राजकुमारी जीवंत हो उठी थी , जो किसी भी तरह लाल कमल के फूल तक पहुँचने के लिए संकल्पित थी । सुग्गी ने हाथ में डंडा पकड़ सधे हुए कदमों से रस्सी पर चलना शुरू किया । उसे नीचे खड़े आदमी बौने लग रहे थे ।

कमली बहुत खुश थी । आमदनी अच्छी हुई थी । बच्चा सरदार की आँखों में लाल डोरे उभरने लगे थे । कमली को घूरते हुए उसने आँख दबाई । कमली ने नखरे से सरदार की ओर देखा और मुस्कुरा पड़ी । बच्चा सरदार ने बात बढ़ाई ,

" यह लौंडिया कहाँ रह गई ?"

" मरियल से चला भी न जाता ..... आ रही होगी..... " कमली के स्वर में झुंझलाहट थी ।

कॉलोनी के कोने पर पहुँच सुग्गी के पैर ठिठक गए। वही औरत बरामदे में खड़ी थी । सुग्गी दीवाल के अन्दर सटे पेड़ को देख रही थी जिसकी शाखाएँ गली के बाहर लटक रही थीं ।

" क्या बात है ?" औरत ने पूछा ।

" यह पारिजाता है ना ..... "

" हाँ , पारिजात है ..... क्यों ?

" कुछ पत्ते दे दो "

" क्या करोगी ?"

" अइया को बुखार है ..... काढ़ा वास्ते ..... "

" ओह ..... "

औरत ने पत्ते तोड़े और एक लिफाफे में रख सुग्गी को पकड़ा दिये ।

सुग्गी तेज कदमों से आगे बढ़ी ।

सुग्गी को देख कमली भभक पड़ी , " कहाँ मर गई थी ?"

सुग्गी चुप रही। उसने लिफाफे को मुट्ठी में कस कर दबा लिया।

" हाथ में क्या है ..... भीख माँग कर खाना लाई है क्या ..... मैं तुझे भूखा मार रही हूँ ..... खाने को नहीं देतीss ..... "

कमली ने दो चांटे सुग्गी के गाल पर जड़ दिये। घूँसा तान वह जैसे ही आगे बढ़ी , बच्चा सरदार ने हाथ पकड़ लिया।

" बस कर ..... मार डालेगी क्या ?"

" लाss दिखा ..... " कमली चिल्लाई। डरी हुई सुग्गी ने हाथ बढ़ा दिया।

लिफाफे में पत्तियाँ देख कमली आग बबूला हो उठी।

" माँग कर लाई है ..... या तोड़कर , क्या करेगी इसका ..... "

" अइया वास्ते ..... " आगे के शब्द सुग्गी के गले में अंटक गये।

" अइया वास्ते ..... तुझसे बोला था उसने ..... यह बुढ़िया हमें मारकर ही मरेगी ..... छोरी को भड़काती रहती है ..... "

" चलss ..... भेजा न खराब कर ..... " कहते हुए बच्चा सरदार ने कमली के हाथ से लिफाफा लेकर अपने कुर्ते की जेब में डाल दिया।

कमली की कोठरी में पहुँच बच्चा सरदार ने बाजा और भोंपू एक ओर सरकाया और खटिया पर ढह गया।

" आज कमाई तो चोखी हुई ..... कड़क चाय पिला दे रानी ..... "

" बनाती हूँ ..... जा हाथ मुँह धो ले ... सरीर में जान आ जायेगी ..... "

कमली चाय के सरंजाम में जुट गई। बच्चा सरदार ने अन्दर नल की ओर जाते हुए अइया के पास खड़ी सुग्गी को इशारा किया।

सुग्गी पास आ चुप खड़ी हो गई।

" यह ले अपना लिफाफा ..... "

सुग्गी ने लपक कर लिफाफा पकड़ने की कोशिश की। बच्चा सरदार ने लिफाफा जमीन पर पटक सुग्गी को दबोच लिया। सुग्गी की चीख बाहर आते ही बच्चा सरदार ने सुग्गी का मुँह अपने हाथों से दबाया और उसकी उगती गोलाइयों पर हाथ फेरने लगा।

चारों दिशाओं में कान रखने वाली कमली तक चीख की आवाज पहुँच चुकी थी। चौकन्नी हो वह भीतर दौड़ी। सामने का दृश्य देख वह काठ हो गई। अगले ही क्षण कमली ने बच्चा सरदार के गाल पर जोर का तमाचा जड़ दिया। सरदार लड़खड़ाया। सुग्गी हाथ छुड़ाकर भागी। कमली बच्चा सरदार को लगभग घसीटते हुए कोठरी में लाई और धक्का मार कर दरवाजे से बाहर कर दिया।

कमली बाजा , भोंपू बाहर फेंकते हुए चिल्लाई, " खबरदार .... अपना काला मुँह यहाँ मत दिखाना ..... तेरी हिम्मत कैसे हुई ..... मेरी बेटी को हाथ लगाने की ..... "

बच्चा सरदार चिल्लाया , " बड़ा चरित्तर दिखा रही है राँड ..... भूखे मरेगी ..... "

" कीड़े पड़े तेरे मुँह में ..... जा दफा हो यहाँ से ..... "

कमली ने जोर से किवाड़ बंद कर लिया।

सुग्गी सहमी हुई अइया से चिपकी खड़ी थी। कमली बड़बड़ा रही थी, " अब जल्दी ही चलेंगे हम दूसरे शहर में .... इहाँ न ..... रहेंगे। भोंपू .... बाजा सब भरम है ..... भरम होवें ही हैं टूटने के लिए। ईs मर्द की जात ... हरामी की हिम्मत तो देखो ..... सुग्गी , ढ़ोल लाइयो ..... "

सुग्गी खूंटी पर टंगा ढोलक उतार लाई। कमली ने ढोलक बजाना शुरू किया। रात के अंधेरे में ढोलक की थाप गूँज रही थी।

****